Tender Heart High School, Sector 33B Chandigarh.

कक्षा - दसवीं

विषय - हिन्दी साहित्य
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : साहित्य सागर

पाठ - १ भेड़ें और भेड़िए (कहानी) लेखक - हरिशंकर परसाई

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम कक्षा दसवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य - पुस्तक साहित्य सागर की पृष्ठ संख्या सत्तावन (57) पर दिए पाठ - १ भेड़ें और भेड़िए नामक कहानी का अध्ययन करेंगे।

बच्चो! आज हम पाठ-१ का आरंभ करने जा रहे हैं इसलिए आप सभी अपनी - अपनी पुस्तक निकाल लें साथ ही साहित्य की उत्तर - पुस्तिका भी निकाल लें और पढ़ने के लिए तैयार हो जाएँ। पाठ के मध्य आपसे कुछ प्रश्न भी पूछे जाएँगे जिनके उत्तर लिखने के लिए आपको तीन मिनट दिए जाएँगे। उन प्रश्नों के उत्तर आप तभी दे पाएँगे यदि आप अपना ध्यान पाठ पर ही केन्द्रित रखेंगे। आशा करती हूँ कि अब आप पढ़ने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

हरिशंकर परसाई द्वारा रचित 'भेड़ें और भेड़िए' कहानी सामाजिक व्यवस्था पर व्यंग्य करती हुई एक प्रतीकात्मक कहानी है। इस कहानी के द्वारा लेखक

ने भेड़ों के माध्यम से आम जनता, भेड़ियों के माध्यम से धोखेबाज और ढोंगी नेताओं के माध्यम से नेताओं के आगे-पीछे घूमने वाले स्वार्थी व्यक्तियों के बारे में बताया है। भेड़ें इस कहानी में आम जनता का प्रतीकात्मक रूप धारण किए हुए हैं और भेड़िए आम जनता का शोषण करने वाले राजनेताओं से संबंधित हैं। आज के नेता व्यक्तिगत स्वार्थ से जुड़े होते हैं। जिस जनता के कारण वे नेता चुनकर सरकार में गए हैं उन्हीं पर वे अत्याचार और अन्याय करते हैं। नेता वर्ग का उद्देश्य मात्र सत्ता हासिल करना और स्वार्थ सिद्ध करना होता है। अतः कहानी का उद्देश्य प्रजातन्त्र में मौजूद खामियों पर प्रकाश डालना है। कितनी आसानी से धोखेबाज और ढोंगी नेता सीधी-सादी जनता को बहलाकर उनका शोषण करते हैं। साथ ही विचारक, पत्रकार और धर्मगुरु जो जनता का साथ देने, उन्हें दिशा-निर्देश देने के लिए हैं, वे भी स्वार्थवश इन ढोंगी का साथ देती हैं। सियारों को इन्हीं के प्रतीक रूप में पेश करना तथा प्रजातन्त्र की पोल खोलना ही इस कहानी का उद्देश्य है।

बच्चो! आइए, अब इस कहानी के पात्रों के बारे में जान लेते हैं। इस कहानी के मुख्य पात्रों में भेड़ें, भेड़िए तथा सियार हैं। अब हम इन पात्रों के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त करेंगे।

* पात्र-परिचय

1. भेड़ें - 'भेड़ें' सीधी-सादी जनता का प्रतीक हैं। भेड़ें नेक, ईमानदार, कोमल, विनयी, दयालु तथा निर्दोष होती हैं। ऐसी ही जनता होती है। इन सारी विशेषताओं

के बाद भी वे बहकावे में आ जाती हैं। वे सोचती हैं कि हम अपने प्रतिनिधियों को जिताकर अपने लाभ के लिए कानून बनवाएँगे, लेकिन बहकावे में आकर ढोंगी नेता को ही चुन लेती हैं और उन्हें अपने निर्णय पर पछतावा ही होता है, क्योंकि वायदे के अनुसार कानून नहीं बनाए जाते हैं।

2. भेड़िए - कहानी में भेड़िए ऐसे राजनीतिज्ञों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो विभिन्न प्रकार के हथकंडे अपनाकर अपने चापलूसों के माध्यम से सामान्य वर्ग को प्रभावित करने में सफल हो जाते हैं और अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं। ये भेड़िए रूपी राजनीतिज्ञ जनता को प्रभावित करने के लिए अपने चापलूसों के प्रचार का सहारा लेते हैं। इन राजनीतिज्ञों के चापलूस आम जनता की नस पहचानते हैं, इसलिए वे ऐसा प्रचार करते हैं, जो जनता को आकर्षित कर सके। अर्थात् जनता के सामने वे ऐसा प्रचार करते हैं कि असली रूप प्रकट ही न हो।

3. बूढ़ा सियार और रंगे सियार - बूढ़ा सियार तथा रंगे सियार उन चापलूसों तथा मौकापरस्त व्यक्तियों के प्रतीक हैं जो राजनीतिज्ञों के आगे-पीछे घूमकर, उनकी हाँ-में-हाँ मिलाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने में सफल हो जाते हैं। ऐसे लोग भ्रष्ट हथकंडे अपनाते हैं तथा उनके द्वारा भोली-भाली जनता को गुमराह कर देते हैं। ये इतने शातिर होते हैं कि इनकी चालों को आम आदमी नहीं समझ पाता।

बूढ़ा सियार बहुत अनुभवी चापलूस है। वह अपने अनुभव का लाभ उठाकर भेड़िए को जितवाने के लिए रंगे सियारों का सहारा लेता है। वह भेड़िए का भी हुलिया बदलकर सीधी-सादी भेड़ों की आँखों में धूल झोंकने में

कामयाब हो जाता है। भेड़िए को जितवाने में बूढ़े सियार का अपना भी स्वार्थ है। उसे बिना कुछ करे-धरे भेड़िए का बचा खुचा माँस खाने को मिल जाता है तथा वह भेड़िए की नज़रों में आदर भी पाने में कामयाब हो जाता है।

बच्चो! अब हम इस कहानी को विस्तार से समझेंगे। आपका ध्यान इसी प्रकार यहीं केन्द्रित रहना चाहिए।

एक बार वन के पशुओं को ऐसा लगने लगा कि वे अब सभ्य जीवन जीने लगे हैं। उन्होंने तय किया कि अच्छी शासन व्यवस्था के लिए प्रजातंत्र (लोकतन्त्र) से बेहतर और दूसरी व्यवस्था नहीं हो सकती इसलिए सभी पशुओं ने एकमत से तय किया कि अब वन प्रदेश में प्रजातन्त्र की स्थापना की जाए। ऐसा वातावरण हो, जहाँ किसी को, किसी से डर न हो, कोई जीवधारी किसी को न सताए, न मारे। सब जीएँ और जीने दें। समाज शांति, स्नेह, बंधुत्व और सहयोग पर आधारित हो। वन प्रदेश में यह विचार ही 'क्रांतिकारी परिवर्तन' था। इस क्रांतिकारी परिवर्तन से स्वर्ण युग की शुरुआत होगी। जिस वन प्रदेश के बारे में लेखक चर्चा कर रहे हैं, उसमें भेड़ों की संख्या अधिक थी। भेड़ों का स्वभाव बहुत अच्छा था। वे स्वभाव से निहायत नेक और ईमानदार थे। वे कोमल, विनयी, दयालु तथा निर्दोष पशु थे। वे कभी हिंसा नहीं करते थे। वे स्वभाव से इतने सभ्य थे कि घास को भी फूँक-फूँक कर खाते थे। भेड़ों ने सोचा कि प्रजातन्त्र की स्थापना से हमें भय नहीं रहेगा, भेड़ों की संख्या अधिक होने के कारण भेड़ों का ही बहुमत होगा और ऐसा कानून बनाया जाएगा जिसमें कोई पशु किसी को नहीं मारेगा

ऐसी स्थिति में वन के हिंसक तथा मांसाहारी जीवों को भूखे मरना पड़ेगा या फिर घास चरना सीखना पड़ेगा। इधर भेड़िए चिंतित थे। उन्हें अपना संकटकाल समाप नज़र आ रहा था। वे सोच रहे थे कि यदि ऐसा कानून बना दिया गया कि कोई पशु किसी को न मारे तो हम क्या खाएँगे ? क्या हमें घास चरना सीखना पड़ेगा ? इसी कारण चुनाव के पास आते - आते भेड़िए का दिल बैठा जा रहा था।

बच्चो ! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी । प्रश्न सुनकर आप अपनी ऑडियो को तीन मिनट केलिए विराम देंगे एवं पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे । प्रश्न इस प्रकार से हैं :-

प्रश्न 1. पशु समाज में कौन - कौन से पशु थे ?
प्रश्न 2. यह क्रांतिकारी परिवर्तन क्या था ? इस परिवर्तन को लाने की बात किसने तय की थी ?
प्रश्न 3. वे यह परिवर्तन क्यों लाना चाहते थे ?

बच्चो ! प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए दी गई अवधि अब समाप्त हो चुकी है । आशा करती हूँ कि आपने उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे । पूछे गए प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं :-

उत्तर 1. पशु समाज में बहुत अधिक भेड़ें थीं और बहुत कम भेड़िए और सियार भी थे।
उत्तर 2. एक बार एक वन के पशुओं को ऐसा लगा कि वे सभ्यता के उस स्तर पर पहुँच गए हैं, जहाँ उन्हें एक अच्छी शासन व्यवस्था अपनानी चाहिए और एक मत से तय हो गया कि वन प्रदेश में प्रजातन्त्र की स्थापना हो। इस परिवर्तन को लाने की बात भेड़ों ने सोची।

उत्तर 3. भेड़ों ने परिवर्तन लाने की बात इसलिए सोची कि इससे उनका भय दूर हो जाएगा। अपने प्रतिनिधियों से वे कानून बनवाएँगे कि कोई जीवधारी किसी को न सताए, न मारे। सब जियें और जीन दें। शान्ति, स्नेह, बन्धुत्व और सहयोग पर समाज आधारित होगा।

बच्चो! अब कहानी को आगे बढ़ाते हुए विस्तार से समझने का प्रयास करते हैं। हर भेड़िए के आस-पास दो-चार सियार होते हैं, जो उनकी चापलूसी करते हैं। ये राजनेताओं के आसपास घूमते रहने एवं चापलूसी करते रहने वाले लोगों का प्रतीक हैं। सियार ने भेड़िए से उनकी चिंता का कारण पूछा तो भेड़िए ने कहा कि वन प्रदेश में नई सरकार बनने से हमारा राज्य तो अब गया। सियार ने दाँत निपोरते हुए (दीनतापूर्वक कहना) कहा कि हम क्या जाने, महाराज! हमारे तो आप ही माई-बाप हैं। भेड़िए ने बताया कि अब ऐसा समय आ गया है कि सूखी हड्डियाँ भी चबाने को नहीं मिलेंगी। सियार चापलूस होने के कारण बात को न जानने का नाटक कर रहा था क्योंकि वह स्वयं को अत्यन्त सीधा-सादा पशु प्रकट करना चाहता था। वह भेड़िए को यह नहीं बताना चाहता था कि वह बुद्धिमान है और सब कुछ जानता है। सियार भेड़िए के मन की बात उसके मुख से ही सुनना चाहता था। भेड़िए ने निराश भाव से कहा कि चुनाव पास आने के कारण उनके पास भागने के सिवा कोई चारा नहीं है, पर जाए कहाँ? बूढ़े सियार ने सुझाव दिया कि उन्हें सरकस में भर्ती हो जाना चाहिए क्योंकि उन्हें वहाँ भूखे मरना नहीं पड़ेगा। भेड़िए ने सियार की बात सुनकर उत्तर दिया कि आजकल सरकस में भी

शेर और रीछ को ही लिया जाता है। भेड़िए इतने बदनाम हैं, इसलिए सरकस में उन्हें कोई नहीं पूछेगा। सियार ने दूसरा सुझाव दिया कि आप अजायबघर में चले जाएँ, वहाँ उन्हें भोजन मिल सकेगा और वे जीवित रह सकेंगे। इस सुझाव को सुनकर भेड़िए ने कहा कि वहाँ भी जगह नहीं है। वहाँ तो अब आदमी रखे जाने लगे हैं अर्थात् आदमी अब ऐसा व्यवहार करने लगे हैं कि उन्हें अजायबघर में रखा जाने लगा है। बूढ़े सियार ने भेड़ियों के जंगल में रहकर चुनाव में बहुमत मिलने की बात की तो भेड़िए ने अविश्वास प्रकट करते हुए कहा कि जब संख्या में भेड़ें अधिक हैं, तो भेड़ियों को बहुमत कैसे मिलेगा। भेड़ें जानबूझ कर अपनी जिंदगी भेड़ियों के हाथ में क्यों देंगी।

बच्चो! आज हम अपनी कहानी को यहीं विराम देते हैं। कहानी का शेष भाग हम अगले सप्ताह पढ़ेंगे। सभी छात्र आज इस कहानी को पुन: पढ़ेंगे एवं समझेंगे।

गृहकार्य

* निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

"पशु समाज में इस क्रांतिकारी परिवर्तन से हर्ष की लहर दौड़ गई कि सुख-समृद्धि और सुरक्षा का स्वर्ण युग अब आया और वह आया।"

प्रश्न 1. वन के पशुओं ने एक मत से क्या तय किया और क्यों? 'वन में प्रजातन्त्र की स्थापना' का आशय स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 2. क्रांतिकारी परिवर्तन' का प्रयोग किस संदर्भ में किया गया है? स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 3. जंगल में हर्ष की लहर क्यों दौड़ गई? सुख-समृद्धि और सुरक्षा के स्वर्ण युग का आशय स्पष्ट कीजिए।

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]